आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/जून 2023
Received:16/06/2023; Accepted:18/06/2023; Published:24/06/2023

भूमंडलीकरण का परिदृश्य: रेहन पर रग्घू

डॉ. मनोज कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,हिन्दी विभाग
जैन विश्वविद्यालय बेंगलूर,560069
मो. नं.- 9616261316
ईमेल – mkp10891@gmail.com

डॉ. मनोज कुमार,**भूमंडलीकरण का परिदृश्य: रेहन पर रग्घू** , आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 3/जून 2023, (341-348)

सार : भारत देश की सामाजिक धुरी परिवार है, जिसमें जीवन के उत्थान पतन का कार्यक्रम चलता रहता है| समाज रूपी गंगा में परिवार रूपी नाव का डगमगाना और संभलना लगा रहता है | इस नाव में सवार सभी व्यक्ति का कर्तव्य होता है कि एक दूसरे का हाथ पकड़कर जीवन रूपी भवसागर को पार किया जाए | यही आदिकाल से चली आ रही भारतीय परंपरा रही है | जीवन गाथा का पुराण रहा है | काशीनाथ सिंह इस मर्म को भलीभांति जानते हैं, समझते और भुक्तभोगी रहे हैं | उन्होंने अपने उपन्यास "रेहन पर रग्घू" में भूमंडलीकरण से प्रभावित समाज और परिवार के यथार्थ यथास्थिति का वर्णन किया है | वह एक यथार्थ रूप से पारिवारिक जीवन से जुड़े व्यक्ति का ही लेखन हो सकता है | एक परिवार का बिखरना और छोटे से गांव से जुड़ी कथा किस प्रकार अमेरिका तक का सफर तय करते हुए जीवन के अंतिम क्षण का अनुभव अनुगामी होता है | काशीनाथ सिंह कहते हैं कि "काशी का अस्सी" हमारा समाज है तो "रेहन पर रग्घू" उपन्यास में बिखरता एक भारतीय परिवार है |

बीज शब्द : भूमंडलीकरण, परिदृश्य, परिवार, जीवन, संत्रास आदि |

प्रस्तावना : व्यक्ति विवाह करता है, परिवार के साथ सुखमय जीवन व्यतीत करने और अपने वंश को आगे बढ़ाने के लिए साथ जीवन यापन करते हैं | लेकिन भूमंडलीकरण के प्रभाव में आकर आज पारिवारिक

धारणा पर गहरा प्रभाव पड़ा है | जिससे परिवार विखंडित होकर तितर-बितर हो रहा है | इस विखंडन के परिणाम स्वरूप संत्रास भरा जीवन व्यक्ति को भोगना पड़ रहा है | "रेहन पर रग्घू" उपन्यास भूमंडलीकरण के प्रभाव का अच्छा उदाहरण है | रघुनाथ बाबू अपनी पत्नी शीला से कहते हैं, "शीला, हमारे तीन बच्चे हैं, लेकिन पता नहीं, क्यों, कभी-कभी मेरे भीतर ऐसी हूक होती है जैसे लगता है- मेरी औरत बांझ है और मैं निःसंतान पिता हूं | मां और पिता होने का सुख नहीं जाना हमने ! हमने न बेटे की शादी देखी, न बेटी की ! न बहू देखी, न होने वाला दामाद देखा | हम ऐसे अभागे मां बाप हैं जिससे उनका बेटा अपने विवाह की सूचना देता है और बेटी धौस देती है कि इजाजत नहीं दोगे तो न्यौता नहीं दूंगी |"[1] यह वेदना रघुनाथ बाबू का ही नहीं है अपितु अब पूरे भारत के हर मां-बाप की यही वेदना हो रही है | क्योंकि भूमंडलीकरण एक ऐसी संस्कृति लेकर आया है, जिसमें परिवार रिस्ते-नाते कोई मायने नहीं रखते हैं | हर व्यक्ति अपनी एकांत ज़िंदगी का दावेदार होता जा रहा है |

भूमंडलीकरण पारंपरिक पारिवारिक जीवन निर्वाह का खंडन करता है | अपनी अवश्यकताओं की पूर्ति हेतु युवा घर से बाहर कमाने जा रहा है | जिसके चलते वह घर से, परिवार से दूर हो जाता है | पुरानी यादों के स्थान पर नई दुनियाँ का स्थान काबिज हो जाता है | माता-पिता और परिवार जन सबके सब पीछे छुट जाते हैं | उनके परिवार की कल्पना एक कल्पना मात्र रह जाती है | भूमंडलीकरण के कारण आज परिवार की कल्पना पूर्ण नहीं हो रही है | भूमंडलीकरण की दुनियां अब हर युवा को अपने चपेट में ले रही है | जिसके चलते एक समाज, परिवार की संकल्पना अपूर्ण हो रही है |

हर व्यक्ति अपनी जिंदगी अपनी शर्तों पर जीना चाहता है | खास कर जब भूमंडलीकरण का युग हो| कहा जाता है की समाज से जाति प्रथा को खत्म करना है, तो रोटी और बेटी का संबंध जोड़ना होगा | इससे जातिप्रथा की खाई को तोड़ा जा सकता है | लेकिन इतना ही नहीं आवश्यक बल्कि और भी चीजों की आवश्यकता होती है | क्योंकि भारतीय समाज में असमानता की भावना गहरे पैठी है | इस उपन्यास में रघुनाथ बाबू की बेटी का प्रसंग है, जो अपनी स्वतंत्र विवाह (अंतरजातीय विवाह) की मांग कर रही है | जिसके पक्ष में रघुनाथ बाबू नहीं है | क्योंकि ऐसे कार्य का खामियाजा आगे चलकर बच्चे और पूरा परिवार भुगतते हैं | क्योंकि भारतीय ग्रामीण ही नहीं शहर भी असमानता और जातिगत भावना से ग्रसित है | रघूनाथ की बेटी सरला का जीवन और सुमन का जीवन आप उपन्यास में देख सकते हैं | सरला एक दलित से विवाह का प्रस्ताव अपने पिता के सामने रखती है, कहती है कि आप दूसरों की शर्तों पर शादी कर रहे थे, यहां मैं करूंगी लेकिन अपनी शर्तों पर; आप मेरी स्वाधीनता दूसरे के हाथ बेच रहे थे, यहां स्वाधीनता

सुरक्षित है; आप अतीत और वर्तमान से आगे नहीं देख रहे थे, हां मैं भविष्य देख रही हूं जहां 'स्पेस ही स्पेस है|[2] वर्तमान युवा का पश्चिमी सभ्यता का अनुगामी होना स्वाभाविक है |

लेकिन यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि हम भारत देश में हैं जहां पर अनेक धर्म और अनेक जातियाँ है | इसके चलते अंतरजातीय विवाह सफल नहीं हो पाता है या लोग सफल नहीं होने देते हैं | मैं अपनी राय रखूँ तो मैं अंतरजातीय विवाह के पक्ष में हूं | लेकिन उसके पहले भारत से धर्म और जातियों का निराकरण होना जरूरी है | एक ऐसा नियम बनाया जाए, जिससे सभी भारतीय एक हों, उनके अंदर ऊंच-नीच की भावना न हो, न ही कोई धर्म हो सभी एक समान हो | नहीं तो उस विवाह के बीच मानसिक तनाव का सबसे बड़ा कारण जातिगत और धर्मगत भावना आड़े आती है | इसी बात को लेकर दोनों परिवारों और व्यक्तियों में आपसी में भेदभाव जन्म ले लेता है | यह भेदभाव काफी बढ़ने के कारण आत्महत्या या अपराध जैसी स्थिति का जन्म होता है | इससे समाज में अशांति का माहौल कायम होता है | अराजक तत्व ऐसे ही मौके का फायदा उठाते हैं |

"रेहन पर रग्घू" उपन्यास में काशीनाथ सिंह भूमंडलीकरण से हो रहे बदलाव के परिणाम स्वरूप होने वाले गतिविधियों पर ध्यान आकर्षित करते हैं | परिवार की धारण इसलिए महत्त्वपूर्ण होती है कि परिवार व्यक्ति का अपना एक आधार होता है | लेकिन भूमंडलीकरण का छल-छदम का प्रभाव घर-घर तक पहुंच रहा है| वह चाहे समाचार पत्र, टी. वी., मोबाइल आदि के माध्यम से ही पहुंच रहा है | रघुनाथ बाबू परेशान है कि बच्चों को ऐसे संस्कार कहां से मिले, यह उनकी समझ से बाहर था | संजय को कोई नहीं मिली न ठाकुर, न बामन, न भूमिहार, मिली तो लाला की लड़की | फिर भी वे इस लायक थे कि मुंह दिखा सकें | लेकिन यह सरला? वे किसे मुंह दिखाएंगे ! कहां मुंह दिखाएंगे?[3] यह ग्रामीण अंचल में व्याप्त जातिगत विचार हैं, व्यक्ति उस जातिगत बंधन से बंधा होता है | क्योंकि उसे गांव में रहना है, सभी उसे ताने मारेंगे, आगे परिवार के बच्चों की शादी की समस्या होगी | संजय सोनल से शादी करके अमेरिका चला जाता है | उसका परिवार गांव में रहता है इसका प्रभाव परिवार पर पड़ता है | गांव के दूसरे व्यक्ति रघुनाथ बाबू से कहते हैं -अभी तुम्हारी समझ में नहीं आ रहा है कि तुम्हारे बेटे ने तुम्हारे साथ क्या किया है ? अपनी नासमझी में तुम्हें कितनी मुसीबत में डाल दिया है? तुम्हारी बेटी अभी कुंवारी है | ईश्वर न करें कि कुँवारी रह जाए | ऐसा अकारण नहीं कह रहा हूं ! तुम्हें पता तब चलेगा जब बेटी के लिए वर देखने निकलोगे ! जहां जाओगे, और बातों से पहले लोग यही पूछेंगे कि आपके रिश्ते कहां कहाँ है? बताओगे या छिपा जाओगे ? ऐसी बातें छिपती तो है नहीं ! तुम छिपाओगे तो वे दूसरे से पता कर लेंगे | जानते ही हो, जो भी रिश्ता करता है ठोक बजा के करता है |[4] भारतीय समाज में यह

सबसे बड़ी समस्या है कि नया जनरेशन स्वतंत्र रूप से जीवन जीना चाहता है | लेकिन समाज की परंपरा का बंधन उनके रास्ते में खडी होती है | बच्चे स्वतंत्र होकर अपने ढंग से जीते हैं, तो उससे होने वाले सामाजिक अवहेलना का शिकार बाकी परिवार वाले होते हैं | मां-बाप के द्वारा बच्चों की विवाह की परंपरा खत्म हो रही है| बच्चे स्वतः ही अपना विवाह कर लेते हैं, जिन्हें परिवार जन की सहमति शामिल हो या न हो | आधुनिक दृष्टिकोण से वर्तमान के लिए यह विचार उपयुक्त है |

लेकिन पारंपरिक परिवारिक तौर पर सही नहीं होता, क्योंकि एक रिश्ता जोड़ने के लिए वह अपने अनेक रिश्ते को खत्म कर देता है | रघुनाथ बाबू अपनी बेटी का विवाह ढूंढते-ढूंढते थक जाते हैं | लेकिन विवाह नहीं मिल पाता है | सामाजिक ताना-बाना का विकराल रूप जो गहरे तक अपनी पैठ बनाई हुई है |

मनुष्य जहां रहता है उस वातावरण, माहौल और वहाँ के लोग यहां तक कि सजीव-निर्जीव सभी से एक जुड़ाव हो जाता है | यही जुड़ाव जीवन जीने का सहयात्री होता है | उसकी दिनचर्या का एक अभिन्न अंग बन जाता है | वही उसके आने वाले पीढ़ी के लिए भी होता है | जिसे हम विरासत का नाम देते हैं | आपके माता-पिता द्वारा जो चीजें आपको प्राप्त होंगी सभी विरासत में आएंगी | रघुनाथ बाबू अपने बच्चों को बताते हैं कि तुम लोग बड़े हुए हो अपनी मां का दूध पीकर | और तुम्हारी मां की महतारी यह जमीन | चावल, दाल, गेहूं, तेल, पानी, नमक इसी जमीन के दूध हैं | और बोलते हो कि हटाइए उसे ? छोड़िए उसे ?[5] बच्चे घर से बाहर रहकर अधिक धन अर्जन करते हैं | तो उन्हें अपनी विरासत से प्राप्त पुश्तैनी जायदाद का लोभ कम हो जाता है | वह इसलिए कि उनका लगाव खत्म हो जाता है, क्योंकि व्यक्ति जहां रहता है वहां का जीवन जीने लगता है | इसलिए रघुनाथ बाबू के माध्यम से काशीनाथ सिंह कहते हैं कि महीने दो महीने में कम से कम एक बार गांव का चक्कर लगाते रहो | देख लें लोग कि नहीं, हैं; ध्यान है | हाल-चाल लेते रहो, कुशल मंगल पूछते रहो, खुशी गमी में जाते रहो, सब से बनाए रखो | अधिया या बंटाई पर खेती करो तब भी | दीया बाती और घर-दुवार की देख-रेख के लिए कोई नौकर चाकर रखो तब भी ![6] आप अपने मूल से जुड़े रहें | नहीं तो दूसरे लोग उस विरासत पर हावी हो जाएंगे और कब्जिया लेंगे | आप का अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा | इस उपन्यास में इस समस्या की तरफ ध्यान आकर्षित करते हुए यह बताया गया है कि बच्चों के घर पर न रहने के कारण बुजुर्ग को डरा-धमका के उनकी जमीन पड़ोसी लोग हड़प लेते हैं | इसलिए लेखक का मानना है कि अपने विरासत को बचाए रखने के लिए आप को निरंतर उससे जुड़े रहने की आवश्यकता है | उसकी चिंता करने की आवश्यकता है, तभी आप की बनी रहेगी और चिंता उसकी होती है, जिससे मोह होता है, प्रेम होता है, जिससे प्रेम ही नहीं परिचय और संबंध ही नहीं उसकी क्या चिंता ? खेत भी उसे पहचानते हैं जो उनके साथ जीता मरता है | वे खेतों को क्या

पहचानेंगे खेत ही उन्हें पहचानने से इंकार कर देंगे ![7] यह स्वभाविक है कि आपको वही पहचानेंगे जिनको आप पहचानेंगे |

भूमंडलीकरण के दौर में पैसों का महत्व सर्वोपरि है, पैसों के लिए भूमंडलीकृत व्यक्ति किसी भी हद तक जा सकता है | उसके लिए रिश्ते-नाते, घर- परिवार, स्नेह आदि कोई मायने नहीं होता है | एक प्रकार से व्यक्ति अमानवीयकृत व्यवहार करने लगता है | उसे पैसा ही हर जगह दिखाई देता है | काशीनाथ सिंह यह स्पष्ट करते हैं कि भूमंडलीकृत व्यक्तियों के लिए पैसा ही सब कुछ हो गया | उपन्यास की पात्र सोनल और संजय के बीच का संबंध पैसों की लालच में जुड़ता है और अधिक पैसों की लालच में टूटता है | संजय अमेरिका पहुंचकर डॉलर कमाने में लग जाता है और सोनल के प्रति उदासीन रहने लगता है | तब सोनल को एहसास होता है कि वह एक ऐसे समाज में आ गई थी जिसमें डॉलर को छोड़कर किसी और चीज जैसे प्यार के लिए ईर्ष्या करना पिछड़ापन और गंवारपन था ![8] अमेरिका जैसे देश में प्यार, स्नेह, लगाव जैसी चीजें तुच्छ हैं, वहां डॉलर ही सब कुछ है | यही कारण है कि वहां के वैवाहिक जीवन में दंपत्ति काफी दिनों तक साथ नहीं रह पाते हैं | संबंध टूट जाता है और अकेले संत्रास भरी जिंदगी जीने को संतप्त रहते हैं | परिवार जैसी भावना वहाँ निहित है ही नहीं | लोग अकेली जिंदगी जीते हैं | यह प्रभाव अब हमारे भारतीयों में भी देखने को मिल रहा है | पैसा कमाने के लिए बच्चे विदेश चले जाते हैं और वृद्ध मां बाप घर पर अकेले संत्रास भरी जिंदगी जीते हैं | रघुनाथ बाबू इसके उदाहरण हैं |

भारत किसानों का देश है, ऐसा कहा जाता है; लेकिन अब किसान खेती से प्लान कर रहे हैं | उन्हें एक नई दुनिया मिल रही है, जहां पर मजदूरी करके उसे प्रयाप्त पैसे मिल सकते हैं, उसकी हर भौतिक आवश्यकता पूर्ण हो सकती है | क्योंकि पैसों से सभी आवश्यक चीजों का उपलब्ध होना स्वभाविक है, ठीक ऐसे ही आज के युवाओं का विचार होता है कि बिना कुछ किए ही यदि पैसों का प्रबंध हो जाए तो क्या कहना | इसी विचार में आज के युवा रहते हैं कि बिना कुछ किए पैसा कमाया जाए काशीनाथ सिंह कहते हैं कि असल चीज पैसा है | अगर हाथ में पैसा हो तो वे सारे जीन्स बिना कुछ किए बाजार में मिल जाते हैं | जिसके लिए आप रात दिन खून पसीना एक करते हैं | बिना कुछ किए, बिना कहीं गए |[9]

जीवन गतिशील है | निरंतर गतिमान रहता है, पीढ़ी दर पीढ़ी जीवन चलता रहता है | बाबा, दादा, पिता, पुत्र, नाती, पनाती आदि जैसे पारंपरिक जीवन का प्रवाह होता है | लेकिन एक पीढ़ी के बाद दूसरी पीढ़ी में जमीन आसमान का अंतर देखने को मिलता है | क्योंकि निरंतर हो रहे परिवर्तन का परिणाम होता है, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में सोच-विचार, रहन-सहन, खान-पान आदि का परिवर्तन हो जाता है | जो आज है वह

कल नहीं होगा, उसके स्थान पर कुछ और होता है | यह परिवर्तन तब और होता है, जब भूमंडलीकरण जैसे परिवर्तनकारी प्रक्रिया हावी हो | "रेहन पर रग्घू" उपन्यास जनरेशन गैप (पीढ़ियों के बीच दूरियाँ) को रेखांकित करता है | रघुनाथ बाबू के पिता का जीवन और उनकी विरासत और रघुनाथ बाबू के पुत्र संजय का जीवन एक जनरेशन गैप के दायरे में आता है | व्यक्ति आने वाली पीढ़ी को अपने से अच्छी जिंदगी देना चाहता है | भूमंडलीकरण के कारण जनरेशन गैप के पीछे निहित दुख को काशीनाथ सिंह रेखांकित करते हैं | रघुनाथ बाबू जनरेशन गैप की विडम्बना गुजरते हैं जिसके कारण इनका दुख अपरम्पार था | इन्होंने बेटे बेटियों के लिए अपने गांव छोड़े थे-अपनी जन्मभूमि-कि यह हमारे लिए तो ठीक चाहे जैसे रह लें लेकिन उनके लिए नहीं | न बिजली, न पानी, न लिखने, पढ़ने, न आने जाने की सुविधा ! घर हो तो ऐसी जगह जहां से खेती बारी पर भी नजर रखी जा सके और बेटों बेटियों को भी असुविधा न हो | वे अपनी जगह जमीन, रिश्ते-नाते, संगी-साथी, बाग-बगीचे, ताल-तलैया छोड़कर जिन संतानों के लिए आए, वे ही बाहर | इतने तक तो गनीमत थी | लेकिन अब हालात यह है कि जो जहां सर्विस कर रहा है, वह उसी नगर में रम गया है और वहां से लौटकर यहां नहीं आना चाहता| अगर वह आना भी चाहता है तो उसके बच्चे नहीं आना चाहते ![10] क्योंकि संबंधों के बीच में दूरियां होने के कारण और सुविधा परस्त जीवन जीने के कारण यह एक पीढ़ी का त्याग रहता है, दूसरी पीढ़ी के प्रति और जहां त्याग होता है, वही आशा उम्मीद होती है | यही उम्मीद दुख का कारण बनती है, क्योंकि जनरेशन गैप होने के कारण नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी का त्याग नहीं देख पाती सिर्फ उसे कमियां ही कमियां नजर आती हैं | अर्थात जिनके लिए बेघर हुए उन्हीं के अपने अलग घर ![11] पुरानी पीढ़ी का त्याग समर्पण वहीं पर समाप्त हो जाता है | जबकि लोग त्याग करते हैं कि उनकी आने वाली पीढ़ियाँ उनके लिए सहयोगी हों | उनके त्याग-परित्याग के साक्षी हों | लोग अपने बच्चों का भविष्य क्यों संवारते हैं ? इसलिए कि उनके भविष्य में उनका अपना भविष्य भी छिपा रहता है ! कायदे से देखा जाए तो वे उनका नहीं, अपना ही भविष्य संवारते हैं ![12]

भूमंडलीकरण के दौर में सबसे बड़ी समस्या वृद्ध समस्या है | जहां एक तरफ परिवार का विखरना है, वहीं दूसरी तरफ परिवार के बिखर जाने के बाद वृद्ध काअकेलापन उसे दुख, संत्रास भरी जिंदगी जीने को मजबूर कर देता है | आज का जीवन भागमभाग का है | इसमें रिश्तो की परवाह नहीं के बराबर है | हम व्यक्तियों के जीवन संबंध एक-दूसरे से जुड़ा है | इस जीवन में उम्मीद, आशा ही एक दूसरे को जोड़ कर रखती है| लोग अपने बच्चों का भविष्य क्यों संवारते हैं ? इसलिए कि उनके भविष्य में उनका अपना भविष्य भी छिपा रहता है | कायदे से देखा जाए तो वे उनका नहीं, अपना ही भविष्य संवारते हैं ![13] एक माता-पिता का जीवन अपने बच्चों से अपेक्षा भरा रहता है कि उनकी आवश्यकता में वही उनके लिए अंधे की लाठी होंगे | लेकिन ऐसा

नहीं होता है | बच्चे मां-बाप से दूर हो जाते हैं | और मां-बाप वृद्धावस्था में अकेले जीवन-यापन करते हैं, नहीं तो उन्हें वृद्ध आश्रम भेज देते हैं |

विचारणीय है कि जिन्होंने जिनका पालन-पोषण किया, उनके लिए ही उनका साथ देने के लिए कोई नहीं रहता है | काशीनाथ सिंह अपने 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में भूमंडलीकरण के द्वारा उत्पन्न वृद्ध समस्या पर गहरी जांच पड़ताल की है | रघुनाथ का जीवन इस समस्या का अच्छा उदाहरण है | जोकि रघुनाथ का ही नहीं अपितु पूरे भारत के वृद्ध की समस्या है | कहते हैं कि बच्चों को पढ़ाया भी तो खेत रेहन पर रख कर रखकर और कालेज से लोन लेकर |[14] रघुनाथ बाबू अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए लोन लेते हैं ताकि उनके बच्चे सफल जीवन का निर्वाह कर सकें | लेकिन वही बच्चे पढ़ कर विदेश चले जाते हैं, उनकी वृद्धावस्था के समय साथ देने के लिए कोई नहीं बचता | झुँझला कर रघुनाथ बाबू कहते हैं कि इसी दिन के लिए उन्होंने पाल पोस कर बड़ा किया था| पढ़ाया लिखाया था, पेट काटे थे, कर्ज लिए थे, खेत रेहन पर रखे थे और दुनिया भर की तवालते सही थीं |[15] इतना करने के बावजूद वह अपने बच्चों को अपने पास नहीं रोक पाते हैं या प्रभाव भूमंडलीकरण का है | एक तरफ चकाचौंध भरी दुनिया दूसरी तरफ पुरानी परंपरानुगामी पारिवारिक दुनिया है | स्वभाविक है कि युवाओं को चकाचौंध भरी दुनिया आकर्षित करती है | लेकिन इसके दूरगामी दुखद परिणाम देखने को मिलते हैं | ग़ालिब छुटी शराब में रवींद्र कालिया अपने पत्नी ममता कालिया के पिता के बारे में बताते हैं कि जब वह अकेलेपन से घबरा जाते तो बच्चों की तरह दहाड़ मार कर रोया करते थे |[16] यह स्थिति होती है वृद्धावस्था में | इसलिए सभी समस्याओं को समन्वय के साथ पारिवारिक जीवन जीना चाहिए, ताकि अगली पीढ़ी के लिए यह संभव बना रहे कि हमें अपने माता-पिता के साथ रहना है |

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. सिंह, काशीनाथ (2017) पाँचवाँ संस्करण, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-89
2. सिंह, काशीनाथ (2017) पाँचवाँ संस्करण, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-54
3. सिंह, काशीनाथ (2017) पाँचवाँ संस्करण, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-54
4. सिंह, काशीनाथ (2017) पाँचवाँ संस्करण, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-47

5. सिंह, काशीनाथ (2017) पाँचवाँ संस्करण, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- 85
6. सिंह, काशीनाथ (2017) पाँचवाँ संस्करण, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- 105
7. सिंह, काशीनाथ (2017) पाँचवाँ संस्करण, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- 105
8. सिंह, काशीनाथ (2017) पाँचवाँ संस्करण, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- 110
9. सिंह, काशीनाथ (2017) पाँचवाँ संस्करण, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- 106
10. सिंह, काशीनाथ (2017) पाँचवाँ संस्करण, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- 104, 105
11. सिंह, काशीनाथ (2017) पाँचवाँ संस्करण, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- 105
12. सिंह, काशीनाथ (2017) पाँचवाँ संस्करण, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- 118
13. सिंह, काशीनाथ (2017) पाँचवाँ संस्करण, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- 118
14. सिंह, काशीनाथ (2017) पाँचवाँ संस्करण, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- 123
15. सिंह, काशीनाथ (2017) पाँचवाँ संस्करण, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- 24
16. कालिया, रवीन्द्र. गालिब छूटी शराब, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- 281, 282

****